"रामनाम"

• गुर कै संगि रहै दिन राती राम रसनि रंगि राता । अवर न जाणसि सबद पछाणसि अंतरि जाणि पछाता ।

अर्थ:- ऐसा दास दिन - रात गुरु की संगति में रहता है भाव, गुरु को अपने मन में बसाए रखता है, परमात्मा के नाम को अपनी जीभ पर बसाए रखता है, और प्रभु के प्रेम में रंगा रहता है । वह दास सदा महिमा के साथ सांझ डालता है निंदा आदि किसी और बल को नहीं जानता, प्रभु को अपने अंदर बसता जान के उसके साथ सांझ डाले रखता है ।

सो जन ऐसा मै मनि भावै । आप मारि अंपरपरि राता गुर की कार कमावै ।

अर्थः- मेरे मन में तो परमात्मा का ऐसा दास प्यारा लगता है जो स्वैभाव स्वार्थ खत्म करके बेअंत प्रभु के प्यार में मस्त रहता है और सतिगुरु के द्वारा बताए हुए कर्म करता है उन पदि्चन्हों पर चलता है जो सतिगुरु ने डाले हुए हैं ।

अंतरि बाहरि पुरख निरंजन आदि पुरख आदेसो । घट घट अंतरि सरब निरंतरि रवि रहिआ सच वेसो ।

अर्थः- मुझे वह दास प्यारा लगता है जो उस अकाल पुरख को सदा नमस्कार करता है जो सारे संसार का आदि है । उस दास को परमात्मा अंदर - बाहर हर जगह व्यापक दिखाई देता है, उस प्रभु पर माया का प्रभाव नहीं पड़ सकता । उस सेवक को वह सदा - स्थिर प्रभु हरेक शरीर में एक रस सब जीवों के अंदर मौजूद प्रतीत होता है ।

साचि रते सच अंम्रित जिहवा मिथिआ मैल न राई । निरमल नाम अंम्रित रस चाखिआ सबदि रते पति पाई ।

अर्थः- जो लोग सदा - स्थिर प्रभु के प्यार में मस्त रहते हैं, जिनकी जीभ पर आत्मिक जीवन देने वाला नाम टिका रहता है, झूठ की मैल उनके अंदर रत्ती भर भी नहीं होती । वह लोग पवित्र नाम जपते हैं, आत्मिक जीवन देने वाले नाम का स्वाद चखते हैं, महिमा की वाणी में मस्त रहते हैं, और लोक - परलोक में इज्जत कमाते हैं ।

गुणी गुणी मिलि लाहा पावसि गुरमुखि नामि वडाई । सगले दूख मिटहि गुर सेवा नानक नाम सखाई ।

अर्थः- गुणवान सेवक, गुणवान सेवक को मिल के नाम जपने की साझ बना के प्रभु नाम का लाभ कमाता है, गुरु के बताए हुए रास्ते पर चल के नाम में जुड़ के आदर पाता है, गुरु की बताई हुई कार कर के उसके सारे दुख दूर हो जाते हैं, हे नानक ! प्रभु का नाम उसका सदा का मित्र बन जाता है ।

हिरदै नाम सरब धन धारण गुरपरसादी पाईऐ । अमर पदारथ ते किरतारथ सहज धिआनि लिव लाईऐ ।

अर्थः- जैसे दुनिया वाला धन पदार्थ इन्सान की शारीरिक आवश्यकताएं पूरी करता है, वैसे ही परमात्मा का नाम हृदय में टिकाना सब जीवों के लिए आत्मिक आवश्यकताएं पूरी करने के लिए धन है आत्मिक जीवन का सहारा बनता है, पर यह धन गुरु की कृपा से मिलता है । आत्मिक जीवन देने वाले इस कीमती धन की इनायत से कामयाब जिंदगी वाले बना जाता है, आत्मिक अडोलता के ठहराव में टिके रह के तवज्जो प्रभु - चरणों में जुड़ी रहती है ।

मन रे राम भगति चित लाईऐ । गुरमुखि रामनाम जपि हिरदै सहज सेती घरि जाईऐ ।

अर्थः- हे मन ! परमात्मा की भक्ति में जुड़ना चाहिए । हे मन ! गुरु के बताए हुए जीवन राह पर चल कर परमात्मा का नाम हृदय में स्मरण कर, इस तरह शाति वाला जीवन गुजारते हुए परमात्मा के चरणों में पहुँचा जाता है ।

भरम भेद भउ कबहूं न छूटसि आवत जात न जानी । बिन हरि नाम को मुकति न पावसि डूबि मुए बिन पानी ।

अर्थः- परमात्मा का नाम स्मरण के बिना भटकना प्रभु से दूरी डर सहम कभी समाप्त नहीं होता जनम - मरण का चक्कर बना रहता है,

सही जीवन की समझ नहीं पड़ती । प्रभु का नाम स्मरण के बिना कोई व्यक्ति माया की तृष्णा से खलासी नहीं प्राप्त कर सकता । विकारों के पानी में गोते खा - खा के आत्मिक मौत सहेड़ लेता है, विषयों से भी तृप्ति नहीं होती ।

धंधा करत सगली पति खोवसि भरम न मिटसि गवारा । बिन गुर सबद मुकति नहीं कबही अंधले धंध पसारा ।

अर्थः- हे मूर्ख मन ! निरी माया की खातिर दौड़ - भाग करते हुए तू अपनी इज्जत गवा लेगा, इस तरह तेरी भटकना समाप्त नहीं होगी । हे अंधे मन ! गुरु के शब्द के साथ प्यार करने के बिना माया की तृष्णा से कभी निजात नहीं मिलेगी । यह दौड़ - भाग बनी रहेगी, तवज्जो का बिखराव बना रहेगा ।

अकुल निरंजन सिउ मन मानिआ मन ही ते मन मूआ । अंतरि बाहरि एको जानिआ नानक अवर न दूआ ।

अर्थः- जो मन उस प्रभु के साथ लग जाता है जो माया के प्रभाव से परे है और जिसकी कोई खास कुल नहीं है, मायावी फुरनों के प्रति उस मन का चाव उत्साह ही समाप्त हो जाता है । हे नानक ! वह मन अपने अंदर के सारे संसार में एक परमात्मा को ही पहचानता है, उस प्रभु के बिना कोई और उसको नहीं सूझता ।

जगन होम पुंन तप पूजा देह दुखी नित दुख सहै । राम नाम बिन मुकति न पावसि मुकति नामि गुरमुखि लहै ।

अर्थः- विकारों से और विकारों से पैदा हुए दुखों से खलासी कोई मनुष्य परमात्मा के नाम का स्मरण किए बिना नहीं पा सकता ये मुक्ति खलासी गुरु की शरण पड़ के प्रभु नाम में जुड़ने से ही मिलती है । जो मनुष्य प्रभु का स्मरण नहीं करता तो यज्ञ - हवन, पुण्य - दान, तप -

पूजा आदि कर्म करने से शरीर फिर भी दुखी ही रहता है दुख ही सहता है ।

राम नाम बिन बिरथे जगि जनमा । बिख खावै बिख बोली बोलै बिन नावै निहफल मरि भ्रमना ।

अर्थः- परमात्मा का नाम जपने से वंचित रह के मनुष्य का जगत में जनम लेना व्यर्थ हो जाता है । जो मनुष्य विषयों का जहर खाता रहता है, विषयों की नित्य बातें करता रहता है और प्रभु स्मरण से खाली रहता है, उसकी जिंदगी बेकार बनी रहती है वह आत्मिक मौत मर जाता है और सदा भटकता रहता है ।

पुस्तक पाठ बिआकरण वखाणै सधिया करम तिकाल करै । बिन गुर सबद मुकति कहा प्राणी रामनाम बिन उरझि मरै ।

अर्थः- पण्डित संस्कृत पुस्तकों के पाठ और व्याकरण आदि अपने विद्यार्थियों आदि को समझाता है, तीनों वक्त हर रोज संध्या कर्म भी करता है, पर हे प्राणी ! गुरु के शब्द के बिना उसको विषयों के जहर से खलासी बिल्कुल नहीं मिल सकती । परमात्मा के नाम से वंचित हो के वह विकारों में फसा रह के आत्मिक मौत सहेड़ लेता है ।

डंड कमडंल सिखा सूत धोती तीरथि गवन अति भ्रमन करै । रामनाम बिन साति न आवै जपि हरि हरि नाम सु पारि परै ।

अर्थः- जोगी हाथ में डंडा और खप्पर पकड़ लेता है, ब्राहमण चोटी रखता है, जनेऊ और धोती पहनता है, योगी तीर्थ यात्रा और धरती भ्रमण करता है । पर इन कामों से परमात्मा के नाम स्मरण के बिना मन को शांति नहीं आ सकती । जो मनुष्य हरि का नाम सदा स्मरण करता है, वह विशे विकारों के समुंदर से पार लांघ जाता है ।

जटा मुकट तनि भसम लगाई बसत्र छोडि तनि नगन भइआ । राम नाम बिन त्रिपति न आवै किरत के बाधै भेख भइआ ।

अर्थः- जटाओं का जूड़ा कर लिया, शरीर पर राख मल ली, तन पर से कपड़े उतार के नंगा रहने लग पड़ा, पिछले किए कर्मों के संस्कारों में बंधे हुए के लिए यह सारा आडंबर निरा बाहरी धार्मिक लिबास ही है । प्रभु का नाम जपे बिना माया की तृष्णा से मन तृप्त नहीं होता ।

जेते जीउ जंत जलि थलि महीअलि जत्र कत्र तू सरब जीआ । गुर प्रसादि राखि ले जन कउ हरि रस नानक झोलि पीआ ।

(1-1126- 1127)

अर्थः- पर हे प्रभु ! जीवों के कुछ वश नहीं है पानी में धरती में आकाश में जितने भी जीव बसते हैं सब में तू स्वयं ही हर जगह मौजूद है । हे नानक ! जिस जीव को प्रभु गुरु की कृपा से विशे - विकारों से बचाता है वह परमात्मा के नाम का रस बड़े स्वाद से पीता है ।

• देहु सदेसरो कहीअउ प्रिअ कहीअउ । बिसम भई मै बहु बिधि सुनते कहहु सुहागिन सहीअउ ।

अर्थः- हे सोहागवती सहेलियो ! हे गुरु के सिखो ! मुझे प्यारे प्रभु का मीठा सा सदेशा दो, बताओ । मैं उस प्यारे की बाबत कई तरह की बातें सुन - सुन के हैरान हो रही हूँ ।

को कहतो सभ बाहरि बाहरि को कहतो सभ महीअउ । बरन न दीसै चिहन न लखीऐ सुहागिन साति बुझहीअउ ।

अर्थः- कोई कहता है, वह सबसे बाहर ही बसता है, कोई कहता है, वह सब में बसता है । उसका रंग नहीं दिखता, उसका कोई लक्षण नजर नहीं आता । हे सोहागनों ! तुम मुझे सच्ची बात बताओ ।

सरब निवासी घटि घटि वासी लेप नही अलपहीअउ । नानक कहत सुनहु रे लोगा संत रसन को बसहीअउ ।

अर्थः- नानक कहता है, हे लोगो ! सुनो ! वह परमात्मा सभी में निवास रखने वाला है, हरेक के शरीर में बसने वाला है फिर भी, उसको माया का अल्प मात्र भी लेप नहीं है । वह प्रभु संत जनों की जीभ पर बसता है संतजन हर वक्त उसका नाम जपते हैं ।

धीरउ सुनि धीरउ प्रभ कउ ।

अर्थः- हे भाई ! मैं प्रभु की बातों को सुन - सुन के अपने मन में सदा धीरज हासल करता रहता हूँ ।

जीउ प्रान मन तन सभ अरपउ नीरउ पेखि प्रभ कउ नीरउ ।

अर्थः- हे भाई ! प्रभु को हर वक्त अपने नजदीक देख - देख के मैं अपनी जिंद प्राण अपना तन मन सब कुछ उसकी भेट करता रहता हूँ ।

बेसुमार बेअंत बड दाता मनहि गहीरउ पेखि प्रभ कउ ।

अर्थः- हे भाई ! वह प्रभु बड़ा दाता है, बेअंत है, उसके गुणों का लेखा नहीं हो सकता । उस प्रभु को हर जगह देख के मैं उसको अपने मन में टिकाए रखता हूँ ।

जो चाहउ सोई सोई पावउ आसा मनसा पूरउ जपि प्रभ कउ ।

अर्थः- हे भाई ! मैं जो - जो चीज चाहता हूँ, वही वही प्रभु से प्राप्त कर लेता हूँ । प्रभु के नाम को जप - जप के मैं अपनी हरेक आस मुराद उसके दर से पुरी कर लेता हूँ ।

गुर प्रसादि नानक मनि वसिआ दूखि न कबहू झूरउ बुझि प्रभ कउ ।

अर्थः- हे नानक ! कह हे भाई ! गुरु की कृपा से वह प्रभु मेरे मन में आ बसा है, अब मैं प्रभु की उदारता को समझ के किसी भी दुख में चिंतातुर नहीं होता ।

लोड़ीदड़ा साजन मेरा । घरि घरि मंगल गावहु नीके घटि घटि तिसहि बसेरा ।

अर्थः- हे भाई ! मेरा सज्जन प्रभु ऐसा है जिसको हरेक जीव मिलना चाहता है । हे भाई ! हरेक ज्ञान इन्द्रियों के द्वारा उसकी महिमा के सोहाने गीत गाया करो । हरेक शरीर में उस का ही निवास है ।

सूखि अराधन दूखि अराधन बिसरै न काहू बेरा । नाम जपत कोटि सूर उजारा बिनसै भरम अंधेरा ।

अर्थः- हे भाई ! सुख में भी उस परमात्मा का स्मरण करना चाहिए, दुख में उसका ही स्मरण करना चाहिए वह परमात्मा किसी भी समय हमें ना भूले । उस परमात्मा का नाम जपते हुए मनुष्य के मन में मानो करोड़ों सूरजों जितनी रौशनी हो जाती है मन में से माया वाली भटकना समाप्त हो जाती है आत्मिक जीवन की ओर से बेसमझी का अंधकार दूर हो जाता है ।

थानि थनंतरि सभनी जाई जो दीसै सो तेरा । संतसगि पावै जो नानक तिस बहुरि न होई है फेरा । (5-700)

अर्थः- हे नानक ! कह हे प्रभु ! हरेक जगह में सब जगहों में तू बस रहा है जो कुछ दिखाई दे रहा है, वह सब कुछ तेरा ही स्वरूप है । साध - संगत में रह के जो मनुष्य तुझे ढूँढ लेता है उसको दोबारा जनम - मरण का चक्कर नहीं पड़ता ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"